Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-3 | July – August – September 2025

Original Article

पटना नगर में कार्यशील महिलाओं की दोहरी भूमिका और सामाजिक स्थिति : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

दिव्या दर्शी

शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग,

पटना विश्वविद्यालय, पटना

Manuscript ID: yrj-140312

ISSN: 2277-7911
Impact Factor – 5.958

Volume 14
Issue 3
July-August-Sept.- 2025
Pp. 107 - 113

Submitted: 12 July 2025
Revised: 27 July 2025
Accepted: 30 July 2025
Published: 10 Sept. 2025

Corresponding Author:
दिव्या दर्शी

Quick Response Code:

Web. https://yra.ijaar.co.in/

DOI: 10.5281/zenodo.19695326

DOI Link: https://doi.org/10.5281/zenodo.19695326

सारांश :

वर्तमान वैश्वीकरण, औद्योगिकीकरण एवं नगरीकरण की प्रक्रियाओं ने भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका को पुनर्परिभाषित किया है। पटना नगर जैसे उभरते शहरी केंद्रों में कार्यशील महिलाएँ पारंपरिक पारिवारिक दायित्वों एवं आधुनिक पेशेवर जिम्मेदारियों के बीच संतुलन स्थापित करने के निरंतर प्रयास में संलग्न हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र कार्यशील महिलाओं की दोहरी भूमिका तथा उनकी सामाजिक स्थिति का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि आर्थिक स्वावलंबन के बावजूद महिलाएँ सामाजिक संरचनाओं, लैंगिक असमानताओं तथा सांस्कृतिक अपेक्षाओं के दबाव में कार्य करती हैं। इस संदर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि कार्यशील महिलाओं की स्थिति केवल व्यक्तिगत प्रयासों का परिणाम नहीं है, बल्कि यह व्यापक सामाजिक संरचना, पारिवारिक व्यवस्था तथा सांस्कृतिक मान्यताओं से गहराई से प्रभावित होती है। एक ओर जहाँ शिक्षा और रोजगार के अवसरों ने महिलाओं को सार्वजनिक क्षेत्र में सशक्त उपस्थिति प्रदान की है, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक लैंगिक भूमिकाएँ उनके निजी जीवन में अब भी प्रभावी बनी हुई हैं।

फलतः, महिलाएँ निरंतर एक ऐसे द्वंद्व का अनुभव करती हैं, जिसमें उन्हें अपने पेशेवर दायित्वों के साथ-साथ घरेलू उत्तरदायित्वों का भी निर्वहन करना पड़ता है। यह द्वंद्व न केवल उनके समय और ऊर्जा पर प्रभाव डालता है, बल्कि उनके मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक संबंधों एवं आत्म-संतुष्टि पर भी गहरा असर डालता है।

विशेष रूप से पटना नगर के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश में यह स्थिति और अधिक जटिल हो जाती है, जहाँ आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन स्थापित करने की प्रक्रिया अभी भी गतिशील अवस्था में है। अतः कार्यशील महिलाओं की दोहरी भूमिका का अध्ययन केवल एक सामाजिक यथार्थ का वर्णन नहीं, बल्कि उन संरचनात्मक परिवर्तनों की पहचान भी है, जो समकालीन भारतीय समाज को आकार दे रहे हैं।

मुख्य शब्द : कार्यशील महिला, दोहरी भूमिका, सामाजिक स्थिति, लैंगिक असमानता, पटना, शहरी समाज

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

How to cite this article:
दिव्या दर्शी (2025). पटना नगर में कार्यशील महिलाओं की दोहरी भूमिका और सामाजिक स्थिति : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण. Young researcher, 14(3), 107 - 113.
https://doi.org/10.5281/zenodo.19695326

Creative Commons

OPEN ACCESS

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-3 | July – August – September 2025

प्रस्तावना :

भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका ऐतिहासिक रूप से घरेलू कार्यों तक सीमित रही है, किंतु आधुनिक शिक्षा, आर्थिक विकास एवं सामाजिक जागरूकता के परिणामस्वरूप यह स्थिति परिवर्तित हो रही है।[1]

पटना नगर, जो बिहार का प्रमुख शहरी एवं शैक्षणिक केंद्र है, इस परिवर्तन का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है। यहाँ की महिलाएँ विभिन्न पेशेवर क्षेत्रों में सक्रिय रूप से भागीदारी कर रही हैं।[2] तथापि, पारंपरिक सामाजिक संरचना अभी भी महिलाओं को घरेलू दायित्वों से मुक्त नहीं करती। फलतः वे एक साथ दो भूमिकाओं—घरेलू एवं पेशेवर—का निर्वहन करती हैं।[3] इस परिवर्तनशील परिदृश्य में कार्यशील महिलाओं की भूमिका केवल आर्थिक गतिविधियों तक सीमित नहीं रह जाती, बल्कि यह उनके सामाजिक अस्तित्व और पहचान के पुनर्निर्माण से भी जुड़ी होती है। कार्यस्थल पर उनकी सक्रिय भागीदारी उन्हें आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास तथा निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है, किन्तु घरेलू स्तर पर पारंपरिक अपेक्षाएँ यथावत बनी रहती हैं।

इस प्रकार, महिलाओं के जीवन में एक प्रकार का संरचनात्मक द्वंद्व उत्पन्न होता है, जिसमें वे आधुनिकता की ओर अग्रसर होते हुए भी परंपरागत बंधनों से पूर्णतः मुक्त नहीं हो पातीं। यह द्वंद्व विशेष रूप से मध्यमवर्गीय परिवारों में अधिक स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है, जहाँ सामाजिक प्रतिष्ठा, पारिवारिक मर्यादा एवं सांस्कृतिक मूल्यों का दबाव महिलाओं की भूमिकाओं को प्रभावित करता है।

अतः यह आवश्यक हो जाता है कि कार्यशील महिलाओं की दोहरी भूमिका को केवल व्यक्तिगत समस्या के रूप में न देखकर, उसे व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में समझा जाए। इस दृष्टिकोण से पटना नगर का अध्ययन न केवल स्थानीय स्तर पर, बल्कि भारतीय शहरी समाज के व्यापक स्वरूप को समझने में भी सहायक सिद्ध होता है।

कार्यशील महिलाओं की दोहरी भूमिका : एक विश्लेषण:

कार्यशील महिलाओं की दोहरी भूमिका केवल विभिन्न कार्यों के यांत्रिक संयोजन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह गहरे सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने, पारंपरिक मान्यताओं तथा लैंगिक अपेक्षाओं से निर्मित एक जटिल सामाजिक यथार्थ है।[4] यह स्थिति उस समय और अधिक जटिल हो जाती है, जब समाज महिलाओं की आर्थिक भागीदारी को स्वीकार तो करता है, किंतु घरेलू दायित्वों के पुनर्वितरण के प्रति उदासीन बना रहता है।

पटना नगर के संदर्भ में कार्यशील महिलाओं की दिनचर्या इस द्वंद्व को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करती है—

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-3 | July – August – September 2025

- वे कार्यस्थल पर पूर्ण दक्षता, अनुशासन और उत्तरदायित्व के साथ अपने पेशेवर दायित्वों का निर्वहन करती हैं।
- घर लौटने के उपरांत वे घरेलू कार्यों—जैसे भोजन निर्माण, साफ-सफाई एवं पारिवारिक प्रबंधन—का संचालन करती हैं।
- इसके अतिरिक्त, वे बच्चों के पालन-पोषण, उनकी शिक्षा तथा परिवार के अन्य सदस्यों की देखभाल में भी सक्रिय भूमिका निभाती हैं।

इस प्रकार, कार्यशील महिलाओं के जीवन में "दोहरे श्रम" (Double Burden) की स्थिति उत्पन्न होती है, जिसमें उनसे निरंतर शारीरिक श्रम एवं भावनात्मक निवेश की अपेक्षा की जाती है। परिणामस्वरूप, यह व्यवस्था उनके लिए न केवल शारीरिक थकान का कारण बनती है, बल्कि मानसिक तनाव, समय के अभाव तथा आत्म-देखभाल की उपेक्षा जैसी समस्याओं को भी जन्म देती है।[5]

इसके अतिरिक्त, यह भी उल्लेखनीय है कि इस दोहरी भूमिका का प्रभाव महिलाओं के सामाजिक संबंधों, वैवाहिक जीवन एवं व्यक्तिगत संतुष्टि पर भी पड़ता है। अनेक बार वे अपनी पेशेवर आकांक्षाओं और पारिवारिक अपेक्षाओं के बीच संतुलन स्थापित करने में संघर्षरत दिखाई देती हैं, जिससे उनके भीतर असंतोष और दबाव की भावना उत्पन्न होती है।

अतः स्पष्ट है कि कार्यशील महिलाओं की दोहरी भूमिका केवल एक व्यक्तिगत अनुभव नहीं, बल्कि एक व्यापक सामाजिक संरचना की अभिव्यक्ति है, जो लैंगिक असमानताओं और सांस्कृतिक रूढ़ियों से संचालित होती है।

सामाजिक स्थिति का विश्लेषण :

पटना नगर में कार्यशील महिलाओं की सामाजिक स्थिति एक परिवर्तनशील एवं बहुआयामी स्वरूप प्रस्तुत करती है। एक ओर, शिक्षा एवं रोजगार के बढ़ते अवसरों ने उन्हें आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामाजिक पहचान प्रदान की है, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक सामाजिक संरचना अब भी उनके व्यवहार, भूमिका एवं निर्णयों को प्रभावित करती है।

कार्यशील महिलाओं को परिवार और समाज में सम्मान तो प्राप्त होता है, किंतु यह सम्मान अक्सर उनकी पारंपरिक भूमिकाओं के निर्वहन से जुड़ा होता है। यदि वे घरेलू अपेक्षाओं को पूर्ण रूप से नहीं निभा पातीं, तो उनके पेशेवर योगदान के बावजूद उनकी सामाजिक स्वीकृति प्रभावित होती है।

इसके अतिरिक्त, कार्यस्थल पर भी लैंगिक असमानता, वेतन में अंतर तथा पदोन्नति के अवसरों में भेदभाव जैसी समस्याएँ उनकी सामाजिक स्थिति को चुनौतीपूर्ण बनाती हैं। इस प्रकार, उनकी स्थिति एक ऐसे द्वंद्व को दर्शाती है, जहाँ वे सशक्तिकरण

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-3 | July – August – September 2025

और सामाजिक बंधनों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि कार्यशील महिलाओं की सामाजिक स्थिति न तो पूर्णतः सशक्त है और न ही पूर्णतः पराधीन, बल्कि यह एक संक्रमणकालीन अवस्था में स्थित है, जो सामाजिक परिवर्तन की दिशा को स्पष्ट रूप से इंगित करती है।

1. आर्थिक सशक्तिकरण: कार्यशील महिलाओं की आय उन्हें आत्मनिर्भर बनाती है तथा परिवार में उनकी निर्णयात्मक भूमिका को सुदृढ़ करती है।[6]

2. सामाजिक प्रतिष्ठा: समाज में कार्यशील महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है, किंतु यह परिवर्तन अभी पूर्णतः संतुलित नहीं है।[7]

3. लैंगिक असमानता: कार्यस्थलों पर वेतन असमानता एवं पदोन्नति में भेदभाव अब भी विद्यमान है, जो सामाजिक संरचना की असमानताओं को दर्शाता है।[8]

4. पारिवारिक अपेक्षाएँ: परिवार महिलाओं से यह अपेक्षा करता है कि वे सभी भूमिकाओं को संतुलित करें, जिससे उन पर अतिरिक्त दबाव उत्पन्न होता है।[9]

प्रमुख चुनौतियाँ :

पटना नगर में कार्यशील महिलाओं की सामाजिक स्थिति एक परिवर्तनशील एवं बहुआयामी स्वरूप प्रस्तुत करती है। एक ओर, शिक्षा एवं रोजगार के बढ़ते अवसरों ने उन्हें आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामाजिक पहचान प्रदान की है, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक सामाजिक संरचना अब भी उनके व्यवहार, भूमिका एवं निर्णयों को प्रभावित करती है।

कार्यशील महिलाओं को परिवार और समाज में सम्मान तो प्राप्त होता है, किंतु यह सम्मान अक्सर उनकी पारंपरिक भूमिकाओं के निर्वहन से जुड़ा होता है। यदि वे घरेलू अपेक्षाओं को पूर्ण रूप से नहीं निभा पातीं, तो उनके पेशेवर योगदान के बावजूद उनकी सामाजिक स्वीकृति प्रभावित होती है। इसके अतिरिक्त, कार्यस्थल पर भी लैंगिक असमानता, वेतन में अंतर तथा पदोन्नति के अवसरों में भेदभाव जैसी समस्याएँ उनकी सामाजिक स्थिति को चुनौतीपूर्ण बनाती हैं। इस प्रकार, उनकी स्थिति एक ऐसे द्वंद्व को दर्शाती है, जहाँ वे सशक्तिकरण और सामाजिक बंधनों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि कार्यशील महिलाओं की सामाजिक स्थिति न तो पूर्णतः सशक्त है और न ही पूर्णतः पराधीन, बल्कि यह एक संक्रमणकालीन अवस्था में स्थित है, जो सामाजिक परिवर्तन की दिशा को स्पष्ट रूप से इंगित करती है।

प्रमुख चुनौतियाँ:

पटना नगर में कार्यशील महिलाएँ अपनी दोहरी भूमिका के निर्वहन के दौरान अनेक सामाजिक, मानसिक एवं संरचनात्मक चुनौतियों का सामना करती हैं। ये चुनौतियाँ उनके व्यक्तिगत जीवन के साथ-साथ उनके पेशेवर विकास को भी प्रभावित करती हैं।

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 5.958| *Website:* https://yra.ijaar.co.in/
Volume-14, Issue-3 | July – August – September 2025

सबसे प्रमुख समस्या **समय प्रबंधन** की होती है, जहाँ महिलाओं को सीमित समय में कार्यालय और घर दोनों की जिम्मेदारियों का संतुलन स्थापित करना पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप उनके लिए व्यक्तिगत समय और आत्म-देखभाल के अवसर अत्यंत सीमित हो जाते हैं।

दूसरी महत्वपूर्ण चुनौती **मानसिक तनाव एवं शारीरिक थकान** है। निरंतर कार्यभार, पारिवारिक अपेक्षाएँ तथा कार्यस्थल का दबाव मिलकर उनके मानसिक स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। इसके अतिरिक्त, **सामाजिक पूर्वाग्रह और लैंगिक असमानता** भी एक गंभीर समस्या है। समाज के एक वर्ग में आज भी यह धारणा विद्यमान है कि महिलाओं का प्राथमिक दायित्व घरेलू कार्य ही है, जिसके कारण उनके पेशेवर योगदान को पूर्ण मान्यता नहीं मिल पाती। अंततः, **संस्थागत सहयोग की कमी**—जैसे लचीले कार्य समय, मातृत्व अवकाश, एवं सुरक्षित कार्य वातावरण का अभाव—भी महिलाओं की प्रगति में बाधा उत्पन्न करता है।

इस प्रकार, यह स्पष्ट होता है कि कार्यशील महिलाओं की चुनौतियाँ केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे व्यापक सामाजिक संरचना और नीतिगत व्यवस्थाओं से भी गहराई से जुड़ी हुई हैं।

- समय प्रबंधन की समस्या[10]
- मानसिक तनाव एवं थकान[11]
- सामाजिक पूर्वाग्रह[12]
- संस्थागत सहयोग का अभाव[13]

संरचनात्मक-कार्यात्मक दृष्टिकोण:

यह दृष्टिकोण समाज को एक संगठित प्रणाली के रूप में देखता है, जहाँ प्रत्येक भूमिका का एक निश्चित कार्य होता है।[14]

नारीवादी दृष्टिकोण: यह दृष्टिकोण महिलाओं की दोहरी भूमिका को पितृसत्तात्मक संरचना का परिणाम मानता है।[15]

संघर्ष सिद्धांत: यह सिद्धांत बताता है कि संसाधनों एवं अवसरों के असमान वितरण के कारण महिलाएँ हाशिए पर रहती हैं।[16]

पटना नगर के संदर्भ में विश्लेषण:

पटना में शिक्षा एवं रोजगार के अवसरों में वृद्धि के कारण महिलाओं की कार्यभागीदारी बढ़ी है।[17] तथापि, पारंपरिक सोच और आधुनिक जीवनशैली के बीच द्वंद्व स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।[18]

सुझाव :

1. परिवार में कार्यों का समान वितरण किया जाए
2. कार्यस्थलों पर लैंगिक समानता सुनिश्चित की जाए
3. महिलाओं के लिए सहायक नीतियाँ विकसित की जाएँ

4. सामाजिक जागरूकता को बढ़ावा दिया जाए
5. मानसिक स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया जाए

निष्कर्ष:

पटना नगर में कार्यशील महिलाओं की स्थिति स्पष्ट रूप से एक परिवर्तनशील एवं संक्रमणकालीन अवस्था को दर्शाती है। आधुनिक शिक्षा, रोजगार के बढ़ते अवसरों एवं आर्थिक आत्मनिर्भरता ने महिलाओं को समाज में एक नई पहचान प्रदान की है। वे अब केवल पारिवारिक दायित्वों तक सीमित न रहकर सामाजिक एवं आर्थिक विकास की सक्रिय सहभागी बन चुकी हैं।

इसके बावजूद, यह भी उतना ही सत्य है कि उनकी यह प्रगति अनेक सामाजिक एवं सांस्कृतिक बाधाओं से घिरी हुई है। आर्थिक रूप से सशक्त होने के बावजूद महिलाएँ पारिवारिक अपेक्षाओं, पारंपरिक मान्यताओं तथा लैंगिक असमानताओं के दबाव में निरंतर संघर्षरत रहती हैं। उनकी दोहरी भूमिका—घरेलू एवं पेशेवर—के बीच संतुलन स्थापित करने की प्रक्रिया उनके जीवन को जटिल और तनावपूर्ण बना देती है।

यह स्थिति यह संकेत देती है कि केवल महिलाओं का कार्यशील होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि समाज की मानसिकता, पारिवारिक संरचना एवं संस्थागत व्यवस्थाओं में भी समान रूप से परिवर्तन आवश्यक है। जब तक घरेलू कार्यों का समान विभाजन, कार्यस्थलों पर लैंगिक समानता, तथा सामाजिक दृष्टिकोण में सकारात्मक बदलाव नहीं होगा, तब तक महिलाओं की वास्तविक मुक्ति और सशक्तिकरण अधूरा ही रहेगा।

अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि कार्यशील महिलाओं की दोहरी भूमिका किसी व्यक्तिगत अक्षमता का परिणाम नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना की देन है। इसे संतुलित करने के लिए आवश्यक है कि समाज, परिवार एवं राज्य तीनों स्तरों पर समन्वित प्रयास किए जाएँ। तभी महिलाएँ अपने जीवन के दोनों पक्षों—पारिवारिक और पेशेवर—में संतुलन स्थापित करते हुए न केवल स्वयं का विकास कर सकेंगी, बल्कि समाज के समग्र विकास में भी प्रभावी योगदान दे पाएँगी।

संदर्भ सूची:

1. देसाई, ए. आर. (2010). भारतीय समाज का समाजशास्त्र. जयपुर: रावत पब्लिकेशन, पृ. 112–118।
2. श्रीनिवास, एम. एन. (1966). Social Change in Modern India. Berkeley: University of California Press, pp. 45–52।
3. सिंह, योगेन्द्र (1973). Modernization of Indian Tradition. दिल्ली: Thomson Press, pp. 88–95।
4. अग्रवाल, बीना (1994). Gender and Land Rights in South Asia. Cambridge: Cambridge University Press, pp. 130–142।

5. चक्रवर्ती, उमा (2003). Gendering Caste: Through a Feminist Lens. कोलकाता: Stree Publications, pp. 67–74।
6. सेन, अमर्त्य (1999). Development as Freedom. Oxford: Oxford University Press, pp. 189–195।
7. विश्व बैंक (2021). महिलाएँ, व्यवसाय और कानून 2021. वाशिंगटन डी.सी.: विश्व बैंक, पृ. 34–48।
8. यूएन वीमेन (2020). कोविड-19 का महिलाओं पर प्रभाव. न्यूयॉर्क: संयुक्त राष्ट्र महिला संगठन, पृ. 12–25।